Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAY-JUNE, 2022, VOL- 10/71

वैष्णव नाट्य परम्परा की पृष्ठभूमि में अंकिया नाट

सुप्रीत मिश्र

शोधार्थी, प्रदर्शनकारी कला विभाग, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ,वर्धा, महाराष्ट्र

Email: mishrasupreet@gmail.com

Paper Received On: 22 JUNE 2022
Peer Reviewed On: 27 JUNE 2022
Published On: 28 JUNE 2022

Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at *www.srjis.com

14वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में असम में श्रीमंत शंकरदेव द्वारा शुरू किये गए वैष्णव आंदोलन ने सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण के युग की शुरुआत की| भारतीय इतिहास में भक्ति काल का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भक्ति काल को स्वर्ण युग माना जाता है। दक्षिण भारत में शुरू हुआ भक्ति आंदोलन, उत्तर भारत में व्यापक रूप से फैल गया। रामानंद, कबीर, तुलसी, सूर,वल्लभाचार्या, गुरूनानक देव , संत नामदेव, चैतन्य महाप्रभु आदि हज़ारों संतों ने भक्ति का प्रचार किया | संत कबीर और रामानंद से प्रभावित होकर श्रीमंत शंकरदेव ने वैष्णव पंत को पूर्वोत्तर भारत में पुष्पित व पल्लवित किया और उसे आगे बढ़ाने का काम उनके शिष्य माधवदेव एवं अन्य संत जैसे अनन्त कन्दली,दामोदर देव,नारायणदास ठाकुर, आताराम सरस्वती,रत्नाकर कन्दली, श्रीधर कन्दली, भट्टदेव, चन्दसाई, मथुरादास बुढ़ा आदि ने किया । श्रीमंत शंकरदेव ने असम में न सिर्फ वैष्णव धर्म का प्रचार किया बल्कि असम के विभन्न जन-जातियों को एक सूत्र में बांधकर उसे पुनर्जीवित किया।

शंकरदेव (1449-1568) का जन्म नगाँव जिले के बटद्रवा(बारदोवाँ) गाँव में हुआ था। पिता का नाम कुसुंबर भूञाँ और माँ का नाम सत्यसंध्या था। जन्म के तुरंत बाद माँ का स्वर्गवास हो गया। दूध पीते बच्चे की देखभाल उसकी दादी खेरसुती ने की थी ।

‘ब माने बटद्रवा औ
क माने कुसुंबर गृहे
मातृ नामे सत्यसंध्या
उदरत जन्मिला
आमार श्रीमन्त शंकरदेव हरि ऐ।’

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कुसुंबर भूञाँ को कई साल तक संतान नहीं हुई थी । भगवान शंकर की आराधना से सुंदर बालक का जन्म हुआ इसीलिए उसका नाम शंकरदेव पड़ा। अपने उम्र के बच्चों की तरह शंकरदेव भी नटखट थे । परंतु दादी के समझाने पर उन्होंने अध्ययन में अपना मन लगाया। अपने पिता की अकाल मृत्यु पर उसे अति कम उम्र में पीढ़ी से चली आ रही शिरोमणि भूञाँ का पद संभालना पड़ा। किन्तु पत्नी की अकाल मृत्यु के बाद अपनी बेटी की शादी करके दामाद को शरोमणि पद को सौंपकर तीर्थ यात्रा पर निकल पड़े। बारह वर्ष तक तीर्थ यात्रा सत्संग में रहें। भागवत आधारित भक्ति शुरू की और नाम कीर्तन को अधिक महत्व दिया। विष्णु को अपना आराध्य देव बना लिया। और यहीं से शंकर देव के माध्यम से असम में वैष्णव धर्म का पदार्पण हुआ। बसवण्णा की तरह शंकरदेव भी एकेश्वर वाद पर विश्वास रखनेवाले थे। उनका भक्ति मत भी 'एक शरणीया भागवती नाम धर्म' कहलाया। विष्णु के परम भक्त श्री शंकरदेव ने असम राज्य में नव-वैष्णव धर्म का प्रवर्तन किया। किसी भी समाज में नवीन भक्ति मार्ग का प्रचार करना इतना सहज नहीं था। कामरूप की तात्कालिक राजनीतिक अस्थिर परिस्थितियों ने शैन और शाक्त एवं तांत्रिक पूजा उपासनाओं ने शंकरदेव के द्वारा प्रतिपादित नव-वैष्णव धर्म के प्रचार-प्रसार में बाधाएँ उत्पन्न की। उन्हें अनेक तरह का कष्ट उठाना पड़ा। अतः उन्हें अपनी मातृ-भूमि को छोड़कर उड़िसा तक तीर्थ यात्रा में जाना पड़ा। अंत में कोचराज के आश्रय में उनके द्वारा प्रतिपादित वैष्णव भक्ति को मान्यता मिली। विविध जातियों में बटा हुआ असमिया समाज के एक सूत्र में बाँधने का श्रय शंकरदेव को मिलता है। असम की जनता को जो सरल भक्ति मार्ग शंकरदेव ने दिखाया उससे वहाँ की जनता में एकता, संप्रीति और समन्वय की भावना उत्पन्न हुई। शंकरदेव ने भक्ति मार्ग के प्रचार के लिए लोक भाषा में ही साहित्य का सृजन किया।

1. काव्य

हरिश्चंद्र उपाख्यान, रूक्मिणी हरण काव्य, बलि छलन, अमृत मंथन, अजामिल उपाख्यान

2. भक्तितत्व प्रधान

भक्ति प्रदीप, भक्ति रत्नाकर, निमि नवसिद्ध संवाद, अनादिपतन

3. अंकिया नाटक

पत्नी प्रसाद, कालिया दमन, केल गोपाल, रूक्मिणी हरण, पारिजात हरण, रामविजय

4. गीत

बरगीत,भटिमा,टोटय,चपय

5. अनुवाद

भागवत, उत्तरकांड रामायण

6. नाम-कीर्तन

कीर्तन, गुणमाला

ऊपर की सभी कृतियों की रचनाओं के द्वारा शंकरदेव ने वैष्णव भक्ति का प्रचार किया। उन्होंने सरल-सहज ब्रजावली भाषा का प्रयोग किया जो असमिया की बोलचाल भाषा और ब्रज भाषा का मेल था। शंकरदेव के समय काल में वैसे देखा जाये तो निर्गुण भक्ति धारा का ही महत्व था। शंकरदेव भी कबीर से काफ़ी प्रभावित थे। परंतु उनका मानना था कि निर्गुण ब्रह्मा की उपलब्धि सबके लिए आसान नहीं है। इसीलिए शंकरदेव अपने अनुयायीयों को पहले सगुण मार्ग में चलकर बाद में निर्गुण ब्रह्मा को प्राप्त करने के लिए कहते थे। उनका मानना था कि भक्ति मार्ग इतना सरल मार्ग है कि उस पर चलकर साधारण मानव भी मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

'ज्ञान कर्म भकति कहिलों करि भेद।
भकति परम पंथ दिलों परिच्छेद।।'

-भागवत,एकादए स्कंध,1/2/11

सगुण साकार देवकीनन्दन कृष्ण उनके आराध्य थे। वे संपूर्ण रूप से भगवान कृष्ण की शरण में आ गए थे। उनकी भक्ति में भी हम कृष्ण के प्रति वात्सल्य एवं संख्य भाव देख सकते हैं ।

'सर्वधर्मान परित्यज्य मामेक शरणम ब्रज'

-गीता,18/66

शंकरदेव ने 'कीर्तनघोषा' में ब्रह्मा के निर्गुण रूप की उपासना पर बल अवश्य दिया,किन्तु उनका मानना है कि धर्म की स्थापना के लिए ही कृष्ण का अवतार हुआ था।

'खण्डिबाक लागि पृथ्वीर महाभार।
दैवकीर गर्भ आसि भैला अवतार।।'

-कीर्तनघोषा

शंकरदेव द्वारा प्रवर्तित 'एकशरण नामधर्म' में जाति के नाम पर भेदभाव नहीं किया था।शंकरदेव के मार्गदर्शन ने पूर्वेत्तर के विभिन्न जातियों को गठन कर 'भकतिया' (भक्तिमूलक) समाज का निर्माण किया था।

'किरात कछारि खाचि गारो मिरि
यवन कंक गोवाल।
असम मुलक धोवा ये तुरक
कुवाच म्लेच चांडाल।।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आनो,पापो नर कृष्ण सेवकर
संगत पवित्र हय
भकति लभिया संसार तरीा
बैकुण्ठे सुखे चलाय।।
-भागवत

शंकरदेव ने छुआछूत ,वर्ण-भेद, बहुदेववाद और मूर्तिपूजा का खंड़न किया था। उनका मानना था कि बैकुण्ठ का द्वार हर मनुष्य के लिए खुला है।उनके द्वारा प्रतिपादित एकेश्वरवाद का मूल मंत्र था-

'एक देव,एक सेव,एक बिने नाइ केव।
नाहि भकतित जाति,नाहि आचार-विचार।।'

शंकरदेव ने सदा कीर्ति और धन को नश्वर माना है। वे अपने बरगीतों में संपत्ति, धन और जीवन की नश्वरता के बारे में कहा है कि-

अथिर धन जन जीवन यौवन
अथिर एहु संसार।
पुत्र परिवार सबहि असार
करबो का हेरि सार।।

बसवण्णा के शरण मंडप की तरह शंकरदेव ने सत्र और नामघर की स्थापना की। यहां मंदिर और मूर्ति के बजाय कीर्तन और भागवत ग्रंथ को रखने की व्यवस्था होती थी। भगवान के गुण नामों की प्रधानता के कारण कीर्तन के लिए 'नाम' शब्द का भी प्रचलन हो जाने के कारण कीर्तन घर का पर्यायवाची शब्द 'नामघर' बन गया। नामघर में कीर्तन के अतिरिक्त भगवान की लीला का अभिनय,भागवत-आदि ग्रंथों का पाठ,अध्ययन-अध्यापन, सामाजिक-सांगठनिक विचार-विमर्श तथा पर्व-उत्सव आदि होते थे।इस तरह कीर्तन घर में ही देवालय, शिक्षालय, पुस्तकालय, रंगमंच और समाज के लिए सांगठनिक कार्य एवं घर में ही देवालय का काम भी चलता था। सत्र के गुरू ही इन सभी कामों का कार्य मुखिया बनकर करते थे। इस तरह सत्र और नामघरों में न सिर्फ ज्ञान,योग और भक्ति का प्रचार होता था बल्कि सामाजिक विकास भी होता था।

शंकरदेव की विशेषता यह है कि जो बात वह कहना चाहते थे उसे कला के माध्यम में कहते थे। उन्होने साहित्य,संगीत,नाटक,नृत्य,वाद्य यंत्र चित्र-कला आदि के द्वारा भक्ति का प्रचार किया। इसीलए वह भक्ति काल के अन्य गुरूओं से हटकर अपनी पहचान बना ली थी । उनकी प्रतिभा का स्मरण करते हुए उनके परम शिष्य माधव देव ने कहा है कि-

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जयगुरू शंकर सर्व गुणाकर
जाकेरि नाहिके उपाम।

हम कह सकते है कि शंकरदेव ने पूर्वोत्तर भारत को अपने भक्ति रस से सींचकर पावन बना दिया। वे न सिर्फं कृष्ण के परमभक्त थे बल्कि एक अच्छे समाज सुधारक,
संगीतकार, नाटककार,गीतकार,कलाकार और चित्रकार भी है। प्रो. वासुदेव शरण अगरवाल जी ने ही कहा है कि "शंकरदेव वह चमकता सूरज है जिसके विचारों में असम हज़ारों पंखुड़ियों की कमल की तरह खिल उठा "

शंकरदेव मानवतावादी विचारधारा के प्रतीक और साहित्य में पारंगत साथ ही श्रव्य और दृश्य कला के विद्वान थे| वैष्णववाद के प्रचार के लिए शंकरदेव की अनूठी और शक्तिशाली रचनाओं में से एक असम का अंकिया नाट है जो कि एक पारंपरिक अभिनय नाटक है और इस नाटक के मंचन को अंकिया भाओना के रूप में जाना जाता है। शंकरदेव (1449-1568 ई.) मध्यकालीन असम के सांस्कृतिक पुनर्जागरण के अग्रदूत थे, जिन्होंने वैष्णववाद की शुरुआत की। वह न केवल एक धार्मिक विचारधारा के प्रचारक थे अपितु उनका मध्यकालीन असम के सामाजिक-धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन में भी अत्यधिक योगदान रहा था|

अंकिया नाट परम्परागत असमी एकांकी नाटक है ,जो श्रीमंत शंकरदेव की रचनात्मक प्रतिभा का प्रतीक है| अनेक विश्लेषणों के उपरान्त ये ज्ञात होता है कि ये नाटक पूर्व आधुनिक काल के असमी कठपुतली नृत्य व ओझा पाली के संयुक्त प्रारूप से निर्मित है और शंकरदेव द्वारा असम में प्रस्तुत संस्कृत नाटकों में अपनाई जाने वाली तकनीक और प्रक्रियाओं के फलस्वरूप प्राप्त वैष्णव नाट्य परम्परा की एक विशेष परम्परा है, जिसे अंकिया नाट कहा जाता है|

यद्यपि शंकरदेव(1449ई.-1568ई.) और माधवदेव (1489ई. – 1596ई.)द्वारा रचित नाटक लोक द्वारा स्वीकार्यता प्राप्त कर चुके हैं,परन्तु अनेक विद्वानों के मतानुसार अंकिया नाट शब्द शंकरदेव के जीवन काल में मौजूद नहीं था|

अंकिया नाट विशेष कला-रूप के साथ एक प्रकार का धार्मिक नाटक है जो की असम के वैष्णव काल में लिखा गया है | असमी नाट्यों का इतिहास व मंचन 16वीं शताब्दी के मध्य में श्रीमंत शंकरदेव द्वारा लिखा गया | श्रीमंत शंकरदेव ने उस समयावधि में निम्नलिखित नाटक लिखे :- चिहना यात्रा, कालिया दमन, पत्नी प्रसाद, केलिगोपाल, रुक्मिणी हरण, पारिजात हरण और राम बिजय। शंकरदेव के बाद, उनके शिष्य माधवदेव ने इस क्षेत्र में अत्यधिक योगदान दिया | इसका प्रभाव असम के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन पर बहुत अधिक पड़ा ।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ऐसा कहा जाता है कि शंकरदेव ने स्वयं उन नाटकों का नाम अंकिया नाट नहीं रखा था। उनके अनुयायियों ने इस शब्द का इस्तेमाल असम की नई नाटकीय परंपरा को इंगित करने के लिए किया। अंकिया नाट के प्रदर्शन को अंकिया भाओना भी कहा जाता है। भाओना का अर्थ है भावों के द्वारा अभिनय अर्थात नाट्य को भावाभिनय के माध्यम से प्रदर्शित करना | शंकरदेव द्वारा रचित अंकिया नाट मूलतः भागवत पुराण और रामायण के विषयों के आसपास ही केन्द्रित रहे । चिहना यात्रा शंकरदेव द्वारा पहला भाओना-प्रदर्शन था | शंकरदेव ने 1468 ई.में प्रथम बार इस नाटक का प्रदर्शन किया| चिहना यात्रा ने भारत के सांस्कृतिक इतिहास में एक नए युग की शुरुआत की | मध्यकालीन भारत में इससे पहले किसी क्षेत्रीय भारतीय भाषा में नाटक परंपरा का कोई प्रमाण नहीं मिलता है | चरत पुथी (वैष्णव संतों की जीवनी) के अनुसार, "यह अंकिया भाओना सात दिनों व सात रातों तक चला और शंकरदेव के प्रदर्शन ने दर्शकों को बेहद प्रसन्न किया" |

असम में शंकरदेव और माधवदेव द्वारा अंकिया नाट की शुरुआत की गई, अधिकांश लोग निरक्षर थे। निरक्षरता के कारण वे ग्रंथों को पढ़ने में असमर्थ थे, इस प्रकार के नाट्यों के प्रदर्शनों के माध्यम से जनसाधारण तक विशेष मसलों को पहुँचाया जा सकता था | अंकिया भाओना के माध्यम से लोगों को बहुत आनंद मिला और वे उनसे बहुत प्रभावित हुए। चरित पुथी में, चरितकर ने विभिन्न यात्रा- भाओना का उल्लेख किया है | चरित पुथी के अनुसार माधवदेव ने गुरु कीर्तन (आध्यात्मिक गुरु की पूजा के लिए विशेष कार्यक्रम) के अवसर पर "दिन भाओना"(दिन में किया गया भाओना) और "रति भाओना" (रात के समय में किया गया भाओना) का आयोजन किया । अहोम युग में, अंकिया भाओना को असमिया समाज में अपार लोकप्रियता प्राप्त हुई। जैसा कि असमिया नाट्य साहित्यकार जिलिंगोनी की पुस्तक में वर्णित है कि अहोम युग में अंकिया भाओना काफी लोकप्रिय हुआ और अक्सर आयोजित किया जाता था। अहोमो के शासनकाल के दौरान कछार और मणिपुर के राजा सम्राट स्वर्गोदेव राजेश्वर सिंह ने अहोम साम्राज्य का दौरा किया था और उस समय उनके सम्मान में रावणवध भाओना का महल में आयोजन किया गया था। इस नाटक में डेका बरुआ (अहोम साम्राज्य के मंत्रियों में से एक) ने उस्ताद के रूप में अभिनय किया। करीब सात सौ दर्शक वहां जमा हुए। राजा गौरीनाथ सिंह (1780-1795 ई.) के काल में पद्मावती हरण भाओना का मंचन उनके महल में किया गया था। उसके आयोजक उन्ही के मंत्री ना-गोहेन के पुत्र थे । बड़ेघर सत्र (धार्मिक संस्था) के महंत ने राजा कमलेश्वर सिंह के सन्मुख रुक्मिणी हरण भाओना का प्रदर्शन किया था , जो चार दिन तक चला था|

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

असम की वैष्णव सत्र परंपरा ने अंकिया भाओना के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।
असमिया वैष्णव परंपरा में सत्र का अर्थ पिछले कुछ वर्षों में एक मठ या निवास स्थान के रूप में विकसित हुआ है जहाँ वैष्णव भगवान को सभी भक्त प्रेमियों के द्वारा प्रार्थना अर्पित की जाती है तथा वहीँ सभी एक साथ निवास करते है और धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेते हैं ।
महेश्वर नियोग ने अपनी पुस्तक 'शंकरदेव-द ग्रेट इंटीग्रेटर' में वर्णित किया है – "सत्राओं के साथ-साथ गांवों में भी नाम-घर (बड़ा प्रार्थना कक्ष) भाओना को प्रस्तुत करने के लिए बनाया जाता था | वहां ऐसा सभागार बनाया जाता था जहां बांस और ईख से बने प्रार्थना कक्ष की दीवारें होती थीं जिन्हें आवश्यकता अनुसार बदला जा सकता था | जिन दीवारों को हटाया या विस्तारित नहीं किया जा सकता था उनके स्थान पर राभा गृह का निर्माण खुले मैदान में किया जाता था जो आयताकार होता था जिसकी छत को आवश्यकता के अनुसार उठाया जा सकता था | माधवदेव का ऐसा राभा गृह सुंदरिडिया के पास एक खेत में बनाया गया था जहाँ गोवर्धन-यात्रा का मंचन किया जाना था |"[1]
शंकरदेव की परंपरा का पालन करते हुए बाद में प्रत्येक सत्राधिकारी (सत्र के प्रमुख) के लिए एक नाट लिखना अनिवार्य हो गया जिसके फलस्वरूप अंकिया भाओनाओं का प्रदर्शन अधिक किया जाने लगा। प्रोसेनियम थिएटर के आने से पहले अंकिया नाट एकमात्र मनोरंजन का साधन था और संगीत , नृत्य का अभ्यास करने का एकमात्र माध्यम था| आधुनिक नाटक और प्रोसेनियम मंच की शुरुआत के बाद अंकिया भाओना के प्रदर्शन की दर कम होने लगी , लेकिन फिर भी असम के ग्रामीण समाज पर अंकिया भाओना का बहुत बड़ा प्रभाव रहा । दूसरी ओर अंकिया भाओना के साथ साथ असमिया भाओना (जहां भाओना की लिपि असमिया भाषा में लिखी जाती है) का भी प्रदर्शन होता रहा |असम के नागांव जिले के भाओना और जमुगुरीहाट के बरेछहरिया भाओना (सोनितपुर, असम) ऐसे भाओना के उदाहरण हैं। इस महान परंपरा का अभ्यास और संरक्षण करने के लिए बहुत से राज्य स्तरीय नाट- भाओना समारोहों का भी आयोजन किया जाता है|

श्रीमंत शंकरदेव द्वारा रचित 6 नाटक हैं –

1.कालिया दमन,
2.पत्नी-प्रसाद ,
3.केलि गोपाल,
4.रुक्मिणी हरण ,

[1] Neog, Maheswar. Sankardeva-The Great Integrator. Omsons Publication, 2011.

5.पारिजात हरण और

6.राम बिजय |

माधव देव के द्वारा रचित 6 नाटक हैं –

1.चोर धरा,

2.पंपरा गुचुआ,

3.भोजन बिहार ,

4.अर्जुन भंजन ,

5.भूमि लेतोवा और

6.नृसिंह यात्रा|

माधवदेव के इन 6 नाटकों को "झूमरा" भी कहा जाता है |

सारांश

वैष्णव परंपरा का सूत्रपात कब हुआ किस कारण से हुआ इस पर भले ही विद्वानों में मतैक्यता न हो पर इस पर सभी एक मत हैं कि नाट्य और संगीत के बगैर वैष्णव सम्प्रदायों की कल्पना भी नहीं की जा सकती| लोक में ऐसी एक सामान्य धारणा है कि मनुष्य जब से है तभी से नाट्य और संगीत है| कुछ विचारकों का तो ऐसा भी मानना है कि मनुष्य में जन्मजात निहित गीत-संगीत एवं नाट्य के तत्त्वों के कारण ही विभिन्न भाषाओं का जन्म हुआ| वैष्णव सम्प्रदायों के कलात्मक पक्ष और उसके प्रदर्शन की विविधताओं पर ध्यान आकृष्ट करने पर ऐसा सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि विभिन्न कलाओं और उसकी शैलीयों के मूल तत्त्वों का इतिहास इसमें संरक्षित है| भारतीय परम्परा की गायन शैली के बदलते स्वरूपों की खोज-बीन के आधार भी यहाँ अर्थात वैष्णव सम्प्रदाय में यत्र-तत्र दिखाई पड़ते हैं | कुछ विचारकों का ऐसा मानना है कि प्रबंधों के तीन भेदों में 'रूपक' तत्त्व जिसमें नाट्य तत्त्व का होना अपरिहार्य था, का विकास कालांतर में ध्रुवपद गायन शैली से विमुख होकर 'विष्णुपद' कहलाया और सम्पूर्ण वैष्णव संगीत इसी गायन पद्धति से परिचालित हुआ| विशुद्ध शास्त्रीय गायक ध्रुवपद गायन में इस भेद को न मानकर अपने चार अथवा छ: खण्डों की गायकी को ध्रुवपद गान ही कहते रहे पर वैष्णव सम्प्रदाय के विभिन्न आचार्य अपने-अपने इष्ट 'कृष्ण' अथवा 'विष्णु' भगवान की पूजा अर्चना में जिस नाट्य विधान एवं सांगीतिक विधान का प्रयोग गान के माध्यम से करते हैं, वह उसे 'विष्णुपद' अथवा 'हवेली-संगीत' के नाम से संबोधित करते हैं| अंकीया नाट और कीर्तनिया के सन्दर्भ में थोड़े बदले रूप में इसी विष्णुपद को सम्पूर्णतया नाट्याभिमुख प्रयोग कर असम में श्रीशंकर देव ने तथा मिथिला के 'हरीसिंह देव' ने कीर्तनिया नाट्य जैसी परम्पराओं का अद्‌भुत संयोजन किया , ऐसा जान पड़ता है | 'रागदारी' संगीत जो कि आज

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जिस भी रूप में उपलब्ध है वह पूर्ववर्ती काल में इस रूप में न था| राग गायन के पूर्व और प्रबंध गायन से भी पहले 'जाति गान' अपने ऐश्वर्यवान शैली से युक्त रहकर शास्त्रीय संगीत का आधार रहा| आज जाति गायन को हम पूर्णतया बदले हुए रूप में रागदारी संगीत के माध्यम से जान समझ रहे हैं| यह विचित्र तथ्य है कि वैष्णव नाट्य परंपरा में जिन पदों और संगीत का उपयोग किया गया अथवा किया जा रहा है उसके रूप-विधान को लेकर भारतीय संगीत की परंपरा में 'राग-ध्यान' और पुनः उस राग के देवताओं का वर्णन भी बहुतायत में प्रयोग किया गया है| भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा में आचार्य शारंगदेव कृत "संगीतरत्नाकर" (13वीं शताब्दी) में सर्वप्रथम राग के देवता का उल्लेख प्राप्त होता है| वैष्णव सम्प्रदाय में प्रयुक्त विभिन्न सांगीतिक क्रिया-कलापों में नाट्य के तत्त्वों के साथ जिन रागों का प्रयोग किया गया उसके देवता ग्रंथों में विष्णु अथवा कृष्ण आधारित ही न होकर विभिन्न देवताओं से सम्बद्ध हैं| अंकिया नाट के सौंदर्यशास्त्रीय विवेचन में यह तथ्य सामने निकल कर आया कि भारतीय राग ध्यान परम्परा में जिन दो देवताओं शिव तथा विष्णु के बहुविध रूपों का साधना परक संस्कार साधकों , गायकों अथवा वादकों द्वारा प्रचार में लाया गया , उसमें वैष्णव चेतना को तथा उसके विविध भाव परक रूपों को अंकिया नाट ने अपने प्रयोग में सम्मिलित किया | रसों की भक्तिपूरक अवधारणा के बीच वैष्णव सम्प्रदाओं ने उसमें भी अंकिया नाट, कीर्तनिया आदि को जानने समझने वाले ने रसों की दार्शनिक अवधारणा के इतर भक्ति मूलक , भाव प्रमुख रसों का आवाहन अपनी अपनी नाट्य परम्परा में किया | वहां रौद्र रूप जीवन का अभिशाप नहीं है , अपितु ईश्वर प्रदत वह वरदान है जिसमें ध्यानस्त होकर स्वयं उनके प्रभु अर्थात विष्णु दुष्टों का उद्धार करते हैं | इससे इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है कि वैष्णव समाज में विशुद्ध तार्किक दार्शनिक वाद के विपरीत 'भक्ति-तत्त्व' को ही प्रधान मान कर कला, साहित्य एवं दर्शन आदि के 'भक्ति-मूल' को ही केंद्र में रखकर विभिन्न उपादानों का उपयोग बिना किसी गुरेज के किया गया|

References

भारतीय भक्ति आन्दोलन और पूर्वोत्तर भारत के भक्ति आन्दोलन में शंकरदेव और माधव देव का योगदान, संपादक- प्रो. दिलीप कुमार मेधि, शब्द- भारती (हिन्दी संसादन केन्द्र), गुवहाटी, असम-2015

Goswami, Kesavananda Dev. Post Sankardeva Vainava faith and Culture of Assam. Sri Satguru Publication, 1988.

Bhatracharya, Harichnadra. Asamiya Natya Sahityar Jilingoni, lawyer 's book stall, 2013

Neog, Maheswar. Sankardeva-The Great Integrator. Omsons Publication, 2011.

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies